डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, जुलाई, 2020
वर्षः 03, अंक–09

महामारी में शिक्षाविदों को आगे आना होगा : प्रो0 राव 03

नवाचारों ने देश की दिशा बदल दी है : प्रो0 दीक्षित 04

यौगिक जीवन–चर्या से क्षमता एवं योग्यता को विकसित करना होगाः कुलपति

21 जून । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ यौगिक साइंस द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दो दिवसीय ई–कांफ्रेंस(21–22 जून, 2020) का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने 6वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि योग एकत्व की बात बताता है। कर्मों की कुशलता ही योग है। इस विषम परिस्थिति में हमें यौगिक जीवन अपनाकर अपनी क्षमता एवं योग्यता को विकसित करना होगा। कुलपति ने बताया कि भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग को अपनाकर जीवन में उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि झारखंड के एन0पी0यू0 विश्वविद्यालय, पलामू के कुलपति प्रो0 आर0एल0 सिंह ने कहा कि आज की परिस्थितियां भले ही प्रतिकूल हैं परन्तु परिस्थितयों को अनुकूल बनाने में योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी जीवन शैली में योग, आसन एवं प्राणायाम को सम्मिलित करके हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के योग विशेषज्ञ डॉ0 सुधीर मिश्र ने बताया कि योग क्रिया नहीं, बल्कि जीवन शैली है। क्रिया में जब हमारा मन और हमारी भावना जुड़ती है, तो शरीर में ऊर्जा और मन में चेतना का जागरण होता है। श्रीमद्भगवत गीता में योग पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि अनेक प्रकार की समस्याओं और बीमारियों से बचने का उपाय इस ग्रन्थ में सम्मिलित है।

तकनीकी सत्र को महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय, हॉलैण्ड के डॉ0 एलन ओल्सगार्ड एवं मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग

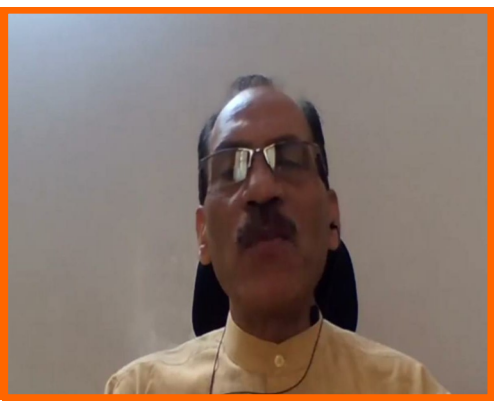

संस्थान, नई दिल्ली के योग विशेषज्ञ गुरूदेव ने भी संबोधित किया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, विवेक सृष्टि योग संस्थान, अयोध्या के निदेशक डॉ0 चैतन्य ने योग तथा श्रीमद् भागवत गीता में वर्णित जीवन के महत्वपूर्ण सूत्रों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि एक स्वस्थ व्यक्ति ही समाज के विकास एवं कल्याण के लिए अपना योगदान दे सकता है। विश्वव्यापी महामारी में योग ही एक जरिया है जिससे निदान मिल सकता है। नियमित योगाभ्यास एवं प्राणायाम के द्वारा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है।

यौगिक विज्ञान संस्थान के समन्वयक प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने बताया कि योग के माध्यम से कोरोना जैसी महामारी से लड़ सकते हैं। नियमित योगाभ्यास से व्यक्ति के अन्दर प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है। योग से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता इंटरनेशनल नेचुरोपैथी संगठन, नई दिल्ली के राष्ट्रीय महासचिव डॉ0 विनोद कश्यप ने भ्रामरी, प्राणायाम और यौगिक क्रियाओं द्वारा कोरोना वायरस का समाधान विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि योग, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से कोरोना महामारी पर निजात पा सकते हैं। इस कोरोना काल में मांसाहार के सेवन से बचना चाहिए। अंकुरित अनाज, सलाद, हरी सब्जियों तथा नारियल पानी के उपयोग से हम अपनी जीवनी शक्ति को विकसित कर इस संकट से बच सकते हैं। उन्होंने योगासनों के अभ्यास को महत्वपूर्ण बताया। कपालभाती का अभ्यास व्यक्ति के जीवन में रामबाण दवा है। प्राणायाम से शरीर को ऊर्जा मिलती है जिससे शरीर की प्रतिरोधक रक्षा प्रणाली सक्रिय होती है।

नई दिल्ली के ई0एन0टी0 सर्जन डॉ0 एन0के0 तनेजा ने बताया कि व्यक्ति अपनी दिनचर्या में बदलाव लाकर, पौष्टिक एवं फाइबर युक्त हरी सब्जियों का सेवन कर कोविड–19 पर नियंत्रण पा सकता है। आयुर्वेदिक औषधियों में कालमेघ, चिरायता, गिलोय, तुलसी के बीज एवं कच्ची हल्दी का प्रयोग करें।

तकनीकी सत्र के अंत में प्रतिभागियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन आलोक तिवारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अनुराग सोनी द्वारा किया गया। दो दिवसीय ई–कांफ्रेंस में देश–विदेश से लगभग पॉच सौ से अधिक प्रतिभागी जुड़े रहे।

हमें जल का उपयोग अनुशासन में रहकर करना होगाः डॉ0 राजेन्द्र सिंह

07 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ के संयुक्त संयोजन में 'कोविड–19 के दौरान जल प्रबन्धन एवं पर्यावरण' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि मैग्सेसे पुरस्कार विजेता डॉ0 राजेन्द्र सिंह ने बताया कि वर्तमान सदी जल आपदा की शताब्दी है। हमें जल का उपयोग अनुशासन में रहकर करना होगा, अन्यथा भारत की हालत कुछ अफ्रीकी देशों जैसी हो जाएगी। उन्होंने बताया कि यूरोप ने किसी हद तक अपना जल बचा कर रखा है, लेकिन हम आज जल के व्यापार में लग गये हैं जल से मुनाफा कमाया जा रहा है, जबकि जल सुरक्षा का विषय है। उन्होंने बताया कि पहले राजस्थान का लोक गीत था कि "बादल तो आते हैं हर साल हमारे गाँव में पर बरसते कहाँ हैं हमें नहीं पता" लेकिन गाँव के लोगों ने सामूहिक प्रयास करके जल संचय किया। अब गीत बदल गया और लोग गाते हैं कि बादल आते हैं हमारे गाँव, बरसते हैं, और हमें खुशी भी देते हैं। उन्होंने बताया कि सरकार नहीं बल्कि सामुदायिक प्रयासों से वाटर रिचार्ज किया जा सकता है। आज युवकों के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी है। अतिक्रमण तथा प्रदूषण ने जल को बहुत नुकसान पहुँचाया है। जल को लाभ का विषय बनाना खतरनाक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था में जल का बड़ा योगदान है। आज जल के प्रति हमारी श्रद्धा में कमी आयी है, जबकि जल ही जीवन है, इसीलिए इसे पंचतत्व में शामिल किया गया है। हमारी कमी की वजह से नदियाँ, नालों में बदल रहीं हैं। आज न खेती के लिये पर्याप्त जल बचा है, न पीने के लिये। भारत की बारह प्रतिशत जनता के पीने के लिये जल नहीं है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में वन्य जीव बोर्ड, उ0प्र0 के सदस्य अनूप कुमार सिंह ने कहा कि भारत भौगोलिक विषमताओं का देश है। कहीं सूखा, तो कहीं बारिश होती रहती है जिस पर हमारा वश नहीं है। लेकिन जल का अनुशासनिक प्रयोग तथा उसको स्वच्छ रखना हमारे हाथों में है। उन्होंने कहा कि अनुपयोगी जल को उपयोगी बनाना हमें सीखना होगा। इसके लिये सिंगापुर और मलेशिया का उदाहरण हमारे पास है। केन्या के प्रो0 राजू केशव राव तथा रजनीश पाठक ने जल प्रबन्धन के तकनीकी और वैज्ञानिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि विकासशील देशों में प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग की बड़ी समस्या के कारण जल प्रबन्धन में मुश्किलें आ रही हैं। प्रदूषण रोकना बड़ी जिम्मेदारी है। वेबिनार में शकुन्तला मिश्रा विवि की प्रो0 पाँचाली सिंह ने कहा कि जल के मामले में भी माँग पूर्ति का सिद्धान्त लागू होता है।

वेबिनार की समन्वयक एवं इग्नू की क्षेत्रीय निदेशक डॉ0 मनोरमा सिंह एवं प्रो0 जसवन्त सिंह ने विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए सभी अतिथियों का परिचय कराया एवं आभार व्यक्त किया। वेबिनार के सहायक समन्वयक डॉ0 कीर्ति विक्रम सिंह तथा डॉ0 परितोष त्रिपाठी ने समन्वय स्थापित करते हुये प्रतिभागियों तथा वक्ताओं के बीच सेतु का कार्य किया। आयोजक सचिव डॉ0 रमापति मिश्र तथा प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह ने सफल संचालन किया।

मूल्यपरक राष्ट्र निर्माण हेतु मुक्त परिचर्चा एवं गहन मंथन की जरूरत हैः मुकुल कानितकर

25 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्विद्यालय एवं भारतीय शिक्षण मण्डल, गोरक्ष प्रान्त के सयुंक्त तत्वावधान में 'जम्मू–कश्मीरः एक महत्वपूर्ण सामरिक भू–क्षेत्र' विषयक दो दिवसीय(24–25, जून 2020) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारतीय शिक्षण मण्डल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री, मुकुल कानितकर ने 'सा विद्या या विमुक्तये' को अर्थ विस्तार देते हुए कहा कि शिक्षा एवं बौद्धिक समाज में भारतीय मनीषा पर आधारित मूल्यपरक राष्ट्र निर्माण हेतु मुक्त परिचर्चा एवं गहन मंथन की जरूरत है। उन्होंने जम्मू–कश्मीर के भू–सामरिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए उसे अखण्ड भारत की संकल्पना का एक अपरिहार्य घटक बताया।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता जम्मू–कश्मीर अध्ययन केंद्र से जुड़े एवं कश्मीर मसलों के विशेषज्ञ श्री आशुतोष भटनागर ने कहा कि जिस राजनीतिक संकल्प शक्ति के साथ धारा 370 का निर्मूलन सम्भव हुआ है, उसी संकल्प शक्ति के आधार पर कश्मीर के उस भू–भाग को भी भारत के मस्तक में जोड़ना होगा जो अखण्ड भारत का ही भू–भाग है। इसके लिए भारतीय विश्वविद्यालयों में जम्मू कश्मीर के भू–सामरिक महत्व पर ऐसी विशद शैक्षणिक परिचर्चा की महती आवश्यकता है जिससे उद्भूत तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर निर्मित रणनीति द्वारा अपने खोये भू–भाग को प्राप्त कर अखण्ड भारत के सृजन द्वारा जम्मू–कश्मीर की भारत राष्ट्र के साथ अखण्डता के स्वप्न को लेकर शहीद हुए माननीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जा सके।

संपूर्णानंद विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र एवं समाज विज्ञान विभाग के अध्यक्ष आचार्य शैलेश मिश्र ने जम्मू कश्मीर भौगौलिक सरंचना के आधार पर उसके भू–सामरिक महत्व पर टिप्पणी करते हुए गिलगिट, बाल्टिस्तान आदि क्षेत्र को पाकिस्तान–चीन जैसे परम्परागत शत्रु राष्ट्रों की दुरभिसंधि से उपजे सीमा विवादों को निपटाने में प्रमुख अस्त्र बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अवध विश्वविद्यालय के कुलपति एवं भारतीय शिक्षण मण्डल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आचार्य मनोज दीक्षित ने कश्मीर की समस्या को पूर्व के तत्कालीन नेतृत्व की भूल का परिणाम बताते हुए चीन और पाकिस्तान के नापाक गठजोड़ को भारत भारती के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया। उन्होंने शैक्षणिक और बौद्धिक जगत से आह्वान किया कि इस महत्वपूर्ण विषय पर अनुसंधान द्वारा ऐसे समन्वित निष्कर्षों को प्राप्त किया जाए जो इसका संधान कर सकें।

भारतीय शिक्षण मण्डल के राष्ट्रीय सह–संगठन मंत्री बी0 शंकरानन्द ने जम्मू–कश्मीर के इस नव–प्रभात में लद्दाख के अविस्मरणीय योगदान को याद करते हुए कहा कि पूर्व के भारतीय नेतृत्व की ऐतिहासिक भूलों से सबक लेते हुए दो निशान, दो विधान, दो प्रधान के भेदभावपूर्ण कलंक को मिटाकर एक निशान, एक विधान और एक प्रधान की व्यवस्था का भारत के शीश पर जो तिलक लगाया गया है, उसने सम्पूर्ण दुनिया में भारत के मस्तक को ऊँचा किया है और इस ऐतिहासिक घटना के मात्र दो कारक हैं पहला–संवेदनशील दृढ़–संकल्पित केंद्र सरकार और संगठित–समन्वित भारतीय समाज।

कार्यक्रम में आगरा कॉलेज, आगरा के राजनीतिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ0 अरुणोदय वाजपेयी ने जम्मू–कश्मीर के सामरिक महत्व पर बोलते हुए भारत–पाक संघर्ष में भारत के लिए पाकिस्तान से ज्यादा खतरा चीन से बताया।

डॉ0 अरविंद आदित्य राज ने विमर्श को आगे बढ़ाते हुए कहा कि धारा 370 के निर्मूलन के बाद जम्मू कश्मीर का न केवल सामरिक महत्व बढ़ा है, अपितु आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियों में भी भारी कमी आयी है।

संगोष्ठी में डॉ0 अजय शर्मा, डॉ0 शिवपूजन पाठक डॉ0 अनुराग रत्न, डॉ0 लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, डॉ0 ऋषिकेश सिंह, डॉ0 शुचिता पाण्डेय, डॉ0 अमिताभ मिश्र एवं डॉ0 कौस्तुभ नारायण मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी का संचालन डॉ0 अर्जुन मिश्र ने किया।

मंथन

15 जुलाई, 2020: श्रावण, कृष्ण पक्ष, दशमी, विक्रम संवत् 2077

'क्रोध मस्तिष्क के दीपक को बुझा देता है।'

बाढ़ का बढ़ता प्रकोप

बाढ़ एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जिससे प्रतिवर्ष विश्व के कई देशों को जूझना पड़ता है। बाढ़ में गाँव के गाँव पलक झपकते ही जल–समाधि ले लेते हैं। हरे–भरे खेत–खलिहान, लहलहाती फसलें, बाग–बगीचे, घर–परिवार, देखते–देखते विकराल नदियों की तेज धारा के साथ बह जाते हैं। पानी के तीव्र बहाव में असंख्य पेड़–पौधे एवं अमूल्य वनस्पतियाँ विलीन हो जाती हैं। बड़ी संख्या में व्यक्ति एवं जीव–जन्तु बाढ़ की भेंट चढ़ जाते हैं। हालांकि मानव ने कई समस्याओं के संदर्भ में प्रयास करके नयी खोजों से उनका समाधान निकाला है। वर्तमान में बाढ़ की अग्रिम चेतावनी देने के लिये सैटेलाइट तकनीक का प्रयोग किया जाने लगा है, फिर भी बाढ़ से होने वाली तबाही को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सका है। बाढ़ से तबाही भारत में एक वार्षिक घटना की तरह है। हर वर्ष, देश का कोई न कोई हिस्सा बाढ़ से प्रभावित होता है। बाढ़ से लोगों के बीच मना. वैज्ञानिक और भावनात्मक अस्थिरता के अलावा, जीवन, सार्वजनिक एवं निजी संपत्ति, और आधारभूत ढांचे को बहुत हानि पहुंचती है। भारत में घटित होने वाली सभी प्राकृतिक आपदाओं में सबसे अधिक घटनाएँ बाढ़ की होती हैं। इसका मुख्य कारण भारतीय मानसून की अनिश्चितता तथा वर्षा ऋतु के चार महीनों में भारी जलप्रवाह है, परंतु भारत की भू–आकृतिक विशेषताएँ भी विभिन्न क्षेत्रों में बाढ़ की प्रकृति तथा तीव्रता के निर्धारण में अहम भूमिका निभाती हैं। भारत विश्व के उन देशों में से एक है, जहाँ प्रतिवर्ष किसी न किसी भाग में बाढ़ आती है। ब्रह्मपुत्र, गंगा, सिंधु एवं अन्य नदियों से असम, प0. बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब में भयंकर बाढ़ आती है। उड़ीसा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश एवं गुजरात भी प्रायः बाढ़ से प्रभावित होते रहते हैं। भारत में लगभग 400 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ के खतरे वाला है। यह देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का आठवां हिस्सा है। बाढ़ से समाज का सबसे गरीब तबका ही सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। बाढ़ से जान–माल की क्षति के साथ–साथ प्रकृति को भी व्यापक हानि पहुँचती है। अधिकाधिक भूमि को खेती योग्य बनाने एवं घरेलू व व्यावसायिक कार्यों में लकड़ी की जरूरत की पूर्ति के लिये वनों को मिटा दिया गया तथा पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की प्रवृत्ति अपनायी गयी। फलस्वरूप पर्यावरण असन्तुलित हुआ है, इससे एक ओर जहां मॉनसून प्रभावित हुआ है, वहीं दूसरी ओर भू–क्षरण एवं नदियों द्वारा कटाव किये जाने की प्रवृत्ति भी बढ़ी है।

समग्र विश्व के लिए संकट है जनसंख्या में वृद्धि

अभिषेक गुप्ता

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 11 जुलाई को विश्व में हो रही जनसंख्या वृद्धि उसके नकारात्मक प्रभाव पर विश्व का ध्यान दिलाने के उद्देश्य से विश्व जनसंख्या दिवस मनाने का निर्णय लिया, जिसकी शुरुआत 1989 से की गई। विश्व की वत. मान आबादी 7.5 अरब के पार पहुंच गई है। यदि जनसंख्या की वृद्धि दर ऐसी ही रही, तो आने वाले समय में विश्व को अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिनमें स्वास्थ्य संबंधित चुनौतियां, सामाजिक विसंगतियां, आर्थिक चुनौतियां और लोगों का दूसरे देशों में पलायन प्रमुख हैं।

विश्व में चीन 140 करोड़ से अधिक आबादी के साथ विश्व में प्रथम स्थान पर हैं, उसके बाद भारत 130 करोड़ की आबादी के साथ विश्व में द्वितीय स्थान पर है। दोनों देशों में विश्व की आबादी का 35.8 प्रतिशत का निवास है और विश्व के स्थलीय भूभाग का केवल 8.7 प्रतिशत ही है, यहां के संसाधनों पर होने वाले दबाव को इन आंकड़ों से समझा जा सकता है। भारत में विश्व की आबादी का 17.5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है जबकि भारत का स्थलीय भूभाग विश्व का केवल 2.3 प्रतिशत है। जिसके कारण भारत में संसाधनों पर जनसंख्या का अतिरिक्त दबाव लगातार बढ़ रहा है, इसी का परिणाम है, कि भारत को आज गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, असमानता आदि का सामना करना पड़ रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण ही आज भारत में उत्तर–दक्षिण राज्यों में क्षेत्रवाद को बढ़ावा मिला है और इसी का परिणाम है कि भारतीय संघ को बनाए रखने के लिए केंद्र सरकार को तमाम चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण विकास की प्रकिया बाधित हो रही है। हाल ही में उत्तर पूर्वी पहाड़ी राज्यों में जनसंख्या संरचना में बदलाव के कारण हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है।

वर्तमान समय मे विश्व के कई देश में जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या संरचना में बदलाव के कारण आंतरिक अशांति का सामना करना पड़ रहा हैं और वहां पर हिंसा को बढ़ावा मिला है। अफ्रीका के कई देशों में आज भुखमरी, बेरोजगारी की समस्या चरम पर है। नाइजीरिया, सूडान आदि इन्हीं समस्याओं से जूझ रहें हैं। जिसके कारण अपराध में लगातार बढ़ोतरी हुई है। अफ्रीका के साथ मध्य एशिया के भी कई देश आज जनसंख्या वृद्धि व जनसंख्या संरचना में बदलाव के कारण गृह युद्ध की स्थिति में पहुंच चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों से यूरोप में भी जनसंख्या संरचना में बदलाव के कारण विरोध के स्वर उठने लगे हैं क्योंकि बाहर से आने वाले लोगो के कारण संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है।

यह भी सत्य है कि युवा आबादी किसी देश के विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है, लेकिन जब युवा को शिक्षा देने के लिए संसाधनों का अभाव व रोजगार देने के लिए काम न हो तो वहां सदैव अशांति पैदा होती है, इसी कारण उस देश को आंतरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण उस देश के विकास का मार्ग बाधित होता है।

विश्व के सभी देशों को मिलकर जनसंख्या वृद्धि को रोकने के प्रयास करने होंगे और लोगों की सहभागिता को भी बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित करना होगा। विश्व के विकसित राष्ट्रों को भी आगे बढ़कर निम्न व मध्यम वर्ग के देशों के कल्याण हेतु आगे आना होगा, क्योंकि कहीं ना कहीं आर्थिक पिछड़ापन जनसंख्या वृद्धि का कारण बनता है। नारी सश. क्तिकरण के माध्यम से भी जनसंख्या में होने वाली तीव्र वृद्धि को रोकने का प्रयास करना होगा। विश्व जनसंख्या दिवस की वर्ष 2020 की थीम कोरोना संकट के प्रभाव के कारण महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखकर किया गया है, 'महिलाओं और लड़कियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा कैसे करें' पर आधारित है। विश्व की लगभग 60 प्रतिशत महिलाएं अनौपचारिक रूप से देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देती हैं।

आत्मनिर्भर भारत अभियान में युवाओं की भूमिका

महेश कुमार मौर्य

प्रत्येक वर्ष 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस का आयोजन किया जाता है। विश्व युवा कौशल दिवस के आयोजन की घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 नवम्बर 2014 को की गयी थी। सभी देशों से यह आग्रह किया गया कि वे अपने देश में युवाओं को कौशल विकास में सहायता प्रदान करें ताकि ये युवा आगे चलकर बेहतर राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकें।

भारत में ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल सके इसीलिए कौशल विकास योजना की शुरुआत की गई थी। जिसमें युवाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मेक इन इंडिया का नारा दिया है जिसके केन्द्र में कौशल विकास ही है। युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए स्टार्टअप इंडिया, प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना आदि कई योजनाओं की शुरुआत की गयी है जिससे देश का युवा देश में रहकर रोजगार पा सके।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना संकट के इस दौर में भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए 20 लाख करोड़ रुपये के राहत पैकेज का ऐलान किया। इस पैकेज को आत्मनिर्भर भारत अभियान का नाम दिया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि इस बड़े राहत पैकेज से भारत में लोगों को रोजगार मिलेगा और यह कोशिश की जाएगी कि अगले कुछ वर्षों में भारत अपनी जरूरत की अधिसंख्य वस्तुओं के लिए खुद पर निर्भर हो जाए। आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को पूरा करने की जिम्मेदारी युवाओं की है।

युवाओं में रोजगार की समस्याओं को लेकर चिंता जाहिर करना स्वाभाविक है। हर युवा चाहता है कि पढ़ लिखकर उसे तुरंत रोजगार मिल जाए, लेकिन वास्तव में स्थिति विपरीत है। इस समय पूरी दुनिया कोरोना वायरस से लड़ रही है, ऐसे में भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना बड़ी चुनौती है। महामारी के कारण भारत में करोड़ों लोगों ने अपनी नौकरियां खो दी हैं। ऐसे में सरकार को देश के विभिन्न क्षेत्रों में उपाय करने के साथ उनमें विस्तारण की जरूरत है। इसी परिप्रेक्ष्य में केन्द्र सरकार ने आत्म निर्भर भारत अभियान की शुरुआत की है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की वर्ल्ड एंप्लॉयमेंट एंड आउट बुक की रिपोर्ट बेहद चिंताजनक है। रिपोर्ट के अनुसार 2015–16 के दौरान भारत की बेरोजगारी दर बढ़कर पांच फीसदी तक पहुंच गई है। यह समस्या वर्ष दर वर्ष बढ़ती जा रही है। देश में बेरोजगारी की दर कम किए बिना विकास का कोई अर्थ नहीं है।

सेना के शौर्य और अदम्य साहस को सलाम

रजनीश पाण्डेय

भारत की आजादी के साथ ही पाकिस्तान का जन्म हुआ। तभी से पाकिस्तान भारत के विरुद्ध षड्यंत्र रचता रहा है। पाकिस्तान ने कई बार नापाक हरकतें की हैं और हर बार भारत ने पाकिस्तान को धूल चटायी है। भारत ने क्षमादान के साथ युद्ध में जीती हुई भूमि भी लौटाई, किन्तु पाकिस्तान निरंतर अपनी शत्रुतापूर्ण मनोवृत्ति का परिचय देता रहा है। अपनी राजनीतिक एवं आर्थिक अक्षमता को छिपाकर पाकिस्तानी जनता का ध्यान भटकाना एवं उसे भारत के विरुद्ध भड़काना पाकिस्तान के राजनेताओं की विकृत मानसिकता रही है। इसके बावजूद भारत ने हमेशा ही पाकिस्तान को माफ कर सम्बंधों को मैत्रीपूर्ण बनाने का ही प्रयास किया है। लेकिन बँटवारे के वक्त से लेकर आज तक पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ केवल कुटिल राजनीति ही की है, उसी का एक उदाहरण है– कारगिल का युद्ध।

कारगिल के युद्ध में 26 जुलाई, 1999 को भारत ने पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ कर विजय की घोषणा की। तब से इस दिन को हर वर्ष कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

कारगिल का युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच हुए बड़े युद्धों में से एक है। कोई भी युद्ध यूँ ही नहीं शुरू होता। अतः इस युद्ध की भी एक विशेष पृष्ठभूमि है। इस युद्ध का मुख्य कारण यह था कि 3 मई, 1999 को भारतीय सेना को सूचना मिली कि कश्मीरी उग्रवादियों और पाकिस्तानी सेना ने एक साथ मिलकर भारत–पाक नियंत्रण रेखा को पार करके भारत की जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की है। जब पाकिस्तान से इस विषय में जवाब माँगा गया, तो उसने इसमें पाकिस्तानी सेना के शामिल होने की बात को साफ नकार दिया और उन घुसपैठियों को कश्मीरी उग्रवादी बताते हुए अपना पल्ला झाड़ लिया। लेकिन बाद में पाकिस्तानी नेताओं के भाषणों, युद्ध में मिले पुख्ता सुबूतों और दस्तावेजों के आधार पर यह साबित हो गया कि इस घुसपैठ में पाकिस्तानी सेना प्रत्यक्ष रूप से मुख्य भूमिका में थी।

भारतीय सेना ने पाक सैनिकों को खदेड़ने के लिए ऑपरेशन विजय चलाया। भारतीय थलसेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्जे वाली जगहों पर हमला किया। करीब दो महीने तक चला कारगिल का युद्ध लगभग 18 हजार फीट की ऊँचाई पर लड़ा गया। कश्मीर के कारगिल में हुई इस जंग में देश ने लगभग 527 से ज्यादा वीर सपूतों को खोया और 1300 से ज्यादा सैनिक घायल हुए। वहीं इस युद्ध में 2700 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और सैकडों की संख्या में पाकिस्तानी सैनिक जंग छोड़ के भाग गए। भारतीय सेना ने धीरे–धीरे पाकिस्तान को सीमा पार वापस जाने को मजबूर कर दिया। कारगिल का युद्ध भारतीय सेना के अदम्य साहस और जांबाजी का ऐसा उदाहरण है जिस पर हर देशवासी को गर्व होना चाहिए। अपने देश की सेना और उसके शौर्य का सदा सम्मान करना प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्तव्य है। कारगिल विजय भारतीय सेना की शौर्य गाथा है। कारगिल युद्ध से ही भारतीय फौज की शक्ति और सामर्थ्य को एक बार फिर पूरे विश्व में स्वीकार किया गया।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय परिसर की गतिविधियों का दस्तावेज है। ओलम्पिक और योग दिवस पर लेख बहुत ही सामयिक एवं तथ्यपरक रहे।

–आशुतोष श्रीवास्तव

सुविचार

अहिंसा सत्य का प्राण है, उसके बिना मनुष्य पशु है।

–महात्मा गांधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 मनोज दीक्षित, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, राजेश एवं साक्षी

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

महामारी में शिक्षाविदों को आगे आना होगाः प्रो0 राव

23 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता विभाग तथा आई0ई0टी0 संस्थान एवं इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी रीजनल सेंटर, लखनऊ के संयुक्त संयोजन में "कोविड–19 संकट में उद्यमी चुनौतियां" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली के कुलपति प्रो0 नागेशवर राव ने कहा कि आज पूरे विश्व में कोविड–19 महामारी के कारण एक बड़ी समस्या खड़ी हो गई है। इससे निपटने के लिए शिक्षाविदों को आगे आना होगा। प्रो0 राव ने बताया कि प्रधानमंत्री ने इसमें अवसर देखने का मंत्र देश को दिया है। इस दिशा में इग्नू भी अपने स्तर से प्रयास कर रहा हैं। सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में इग्नू द्वारा अनेक रोजगार परक कोर्स चलाये जा रहे हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने बताया कि आत्म निर्भर और आत्म विश्वास से परिपूर्ण भारत हमारा सपना है। कोरोना महामारी इतनी आसानी से जाने वाली नहीं है। हमें इसके साथ जीना सीखना होगा। कुलपति ने कहा कि स्वदेशी और विदेशी का अन्तर समझना होगा। विदेशों की अपेक्षा भारत में मृत्यु दर कम है, क्योंकि हम में से अधिकांश शाकाहारी हैं। उन्होंने कहा कि देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, बल्कि प्रतिभाओं का सही दिशा में उपयोग करने की जरुरत है।

मुख्य वक्ता के रूप में फोरकास्टिंग एंड असेसमेंट काउंसिल डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के डॉ0 प्रदीप श्रीवास्तव ने बताया कि उद्यमिता का अभिप्राय कार्य करना होता है, जिससे परिणाम मिले। पिछले कुछ दशकों से भारत में विकास की गति तेज हुई है। विदेश की तमाम कंपनिया भारत में निवेश कर रही हैं। आज उच्च शिक्षित लोग नवोन्मेषी बन कर कुछ नया क्रांतिकारी करने के लिये आगे आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि इंदिरा नुई, फाल्गुनी नायर, किरण मजूमदार शा जैसी महिलाएं देश की लड़कियों के लिए नई रोल मॉडल हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में ढोफेर यूनिवर्सिटी, ओमान के डॉ0 सुहैल घोसे ने बताया कि चीन के उद्योग धंधे बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं। वहाँ के तमाम उद्योग बन्द हो गए हैं। हमें नई स्थितियों में व्यापार करने की कला सीखनी होगी। इससे छोटे उद्योग–धंधों को बढ़ावा मिलेगा। हमें आने वाली चुनौतियों का सामना करना सीखना होगा। ढोफेर यूनिवर्सिटी, ओमान के डॉ0 शौविक सान्याल ने बताया कि इस महामारी को देखते हुये आर्थिक संकट पूरे विश्व पर आया है। अब छोटे व मंझोले उद्योगों के लिये अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण हुआ है।

तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए भारत सरकार के कार्यकारी निदेशक डॉ0 अजय श्रीवास्तव ने बताया कि आज देश के सामने आर्थिक चुनौती है। इस संकट में कई उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने कहा कि अब आने वाले समय में नये उद्योग–धंधों का उदय होना तय है। मार्केटिंग, हेल्थ तथा कृषि के क्षेत्र में नए अवसर उत्पन्न होंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का दूरदर्शी दृष्टिकोण, चाहे वो मुद्रा योजना हो, मेक इन इंडिया हो, कौशल विकास या स्टैंड अप योजना के रूप में हो, देश को नई ऊँचाई देगा। उन्होंने कहा कि प्रवासी श्रमिकों को रोजगार से जोड़ने के लिये भारत सरकार नीतियाँ बना रही है। अवध विश्वविद्यालय के कुलपति के वित्तीय सलाहकार प्रो0 आर0एन0 राय ने कहा कि उद्यम की अवधारणा में व्यापक बदलाव आया है। हमें समय के साथ चलना सीखना होगा। इग्नू के सहायक समन्वयक डॉ0 कीर्ति विक्रम सिंह ने कहा कि बुद्धिजीवी समाज का दायित्व है कि देश के नौजवानों को सही रास्ता दिखाएं जिससे उनमें हताशा का भाव न आने पाए। कार्यक्रम में महाविद्यालय विकास परिषद के निदेशक एवं इग्नू के समन्वयक प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुये वेबिनार के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

वेबिनार का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना एवं कुलगीत के साथ हुआ। इग्नू की क्षेत्रीय निदेशक डॉ0 मनोरमा सिंह तथा सहायक निदेशक डॉ0 कीर्ति विक्रम सिंह ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। वेबिनार का संचालन आई0ई0टी0 संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने किया। कार्यक्रम सचिव रमेश मिश्र ने बताया कि इस वेबिनार में देश–विदेश से कुल 2355 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में तकनीकी संचालन परिमल तिवारी एवं संजीत पांडेय द्वारा किया गया।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैः कुलपति

14 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में "ई–कंटेंट क्रिएशन ऑन मूक्स एण्ड मूडल्स" विषय पर पांच दिवसीय(10–14 जुलाई, 2020) फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने बताया कि आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। इसलिए शिक्षकों को हमेशा अपडेट रहना होगा। यह एक कठिन विधा है, इसके सोल्यूशन को क्रिएट करने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। कुलपति ने प्रतिभागियों से कहा कि पब्लिक स्पीकिंग में प्रजेंटेबल वायस होनी चाहिए। कुलपति ने कहा कि हमें एक ऐसी टीम की आवश्यकता है जो क्रिएविटी के साथ कार्य करें। शिक्षकों को हमेशा प्रेक्टिकल पर जोर देना चाहिए। उन्होंने बताया कि कोई आइडिया कभी गलत नहीं होता, वह अविष्कार को प्रेरित करता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एआईसीटीई के पूर्व निदेशक डॉ0 मनमीत सिंह मन्ना ने बताया कि ई–कंटेंट की उपयोगिता के अनुसार ही छात्रों में उसकी रूचि बनी रहती है। यदि हम शिक्षक रूचिकर कंटेंट नहीं उपलब्ध करायेंगे। तो हमारे छात्र क्लास में रूचि नहीं लेंगे। डॉ0 मन्ना ने बताया कि शिक्षकों को स्वयं को अपडेट करते हुए नई–नई तकनीकी से वीडियो लेक्चर क्रिएट करना जरूर सीख लेना चाहिए। उन्होंने बताया कि फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम द्वारा विभिन्न संस्थानों से जुड़े लगभग तीन सौ शिक्षक ई–कंटेंट बनाना सीख चुके हैं।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्पोकन टयूटोरियल आई0आई0टी0 मुम्बई की स्टेट कोऑर्डिनेटर डॉ0 रेनू सिंह ने बताया कि स्पोकन टयूटोरियल के माध्यम से शिक्षक ई–लर्निंग तथा टीचिंग में अपने पंख पसार सकते है। उन्होंने बताया कि आई0आई0टी0 बाम्बे की इस मुहिम में अवध विश्वविद्यालय के शिक्षक भी शामिल होकर लाभ प्राप्त कर सकते है। इसके लिए संस्थान के शिक्षक राजीव कुमार को कोऑर्डिनेटर बनाया गया है। पांच दिवसीय तकनीकी सत्र में एन0आइ0टी0टी0आर0, चेन्नई से प्रो0 मलिका, एच0बी0टी0यू0, कानपुर से डॉ0 संजीव सक्सेना, एमिटी विश्वविद्यालय, लखनऊ से कर्नल धीरज उपाध्याय एवं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से मोहम्मद वाजिद ने प्रतिभागियों को यू–ट्यूब चैनल सेट करना एवं ई–लर्निंग के बारे में बताया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने संस्थान में ई–लेक्चर के लिए एक स्टूडियो का उद्घाटन किया। इसके हो जाने से शिक्षक छात्र–छात्राओं के लिए वीडियो लेक्चर क्रिएट कर सकते हैं। संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने अतिथियों को स्वागत करते हुए संस्थान द्वारा अब तक किये गये कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष मनीषा यादव ने किया। कार्यक्रम के आयोजक राजीव कुमार ने बताया कि यह कार्यक्रम पांच चरणों में सम्पन्न हुआ है जिसमें आई0आई0टी0 बाम्बे ने संयोजक के रूप में कार्य किया है। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ0 ब्रजेश भारद्वाज, पारितोष त्रिपाठी, रमेश मिश्र, शोभित श्रीवास्तव, आशुतोष मिश्र सहित अन्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

स्वयं को स्थापित करने के लिए कम्युनिकेशन स्किल बहुत जरूरी : प्रो0 दीक्षित

08 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एंड सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट सेल द्वारा "कम्युनिकेशन एण्ड एप्टीट्यूड क्लासेस" विषय पर विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने बताया कि आज के सामाजिक परिवेश में स्वयं को स्थापित करने के लिए कम्युनिकेशन स्किल बहुत जरूरी है। कम्युनिकेशन का मतलब सिर्फ बोलना ही नहीं होता, बल्कि उसके बारे में समझना, सोचना और अपने विचारों को सही रूप में प्रस्तुत करना होता है। यही कम्युनिकेशन का मूल सिद्धांत है। कुलपति ने छात्र–छात्राओं को बताया कि कोरोना महामारी ने हम सभी के जीवन को प्रभावित किया है। आने वाला समय आत्मनिर्भर बनने का है। इसलिए होने वाले परिवर्तन के बारे में सोचना होगा और अपने को इस आपदा से निपटने के लिए स्थापित करना होगा। कुलपति ने बताया कि इस तरह के आयोजन विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एमिटी विश्वविद्यालय लखनऊ की संचार विभाग की अध्यक्ष डॉ0 नलिना सिंह ने बताया कि आज के समय में रोजगार तो बहुत हैं। लेकिन उस रोजगार में कार्य करने वाले दक्ष व्यक्तियों की कमी है। इसका प्रमुख कारण कम्युनिकेशन स्किल है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि रोजगार के लिए अपने कम्युनिकेशन स्किल को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके बिना रोजगार में अपने को स्थायित्व नहीं दे पायेंगे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में एमिटी विश्वविद्यालय लखनऊ के डॉ0 राजकुमार सिंह ने बताया कि कम्युनिकेशन हमारे जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। उन्होंने अपने विचारों को सबके समक्ष रखना एवं वर्तमान की विषम परिस्थियों में कम्युनिकेशन स्किल को विकसित करने पर विस्तृत चर्चा की।

कार्यक्रम में प्लेसमेंट एंड सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट सेल की डायरेक्टर डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, संयोजक राजीव कुमार, अनुराग सिंह, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, निधि प्रसाद सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की ऑनलाइन उपस्थिति रही।

विश्वविद्यालय के न्यू कैंपस में वृहद वृक्षारोपण अभियान

5 जुलाई। वन महोत्सव के मौके पर अवध विश्वविद्यालय के न्यू कैंपस में वृहद वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की गई। इसका नेतृत्व विश्वविद्यालय कार्यपरिषद सदस्य व ग्रीन समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सिंह ने किया। उन्होंने बताया कि पूरे जनपद में 34 लाख 13 हजार 440 पौधरोपण होना है जिसके सापेक्ष अवध विश्वविद्यालय को 15 हजार 600 पौधों को रोपित करना है। विश्वविद्यालय के न्यू कैंपस में ग्रीन समिति के सचिव डॉ0 विनोद चौधरी, इंजीनियरिंग कॉलेज से जैनेन्द्र पीयूष राय, अनुराग सिंह, खेल विभाग से प्रतिभा त्रिपाठी, पूर्णिमा दूबे, एवं शैलेश मिश्र के साथ सुरक्षाकर्मियों ने भी पौधरोपण किया। विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित के नेतृत्व में 40,000 से ज्यादा पौधरोपण कर पूरे परिसर को प्राकृतिक वातावरण से आच्छादित कर दिया गया है।

ग्रीन समिति सचिव डॉ0 विनोद चौधरी ने बताया कि नीम, आंवला अमरूद, आम, बड़हर, लीची, सागौन, एवं इमारती लकड़ी के पौधे रोपित किए जा रहे हैं। गत वर्ष 01 लाख पौधरोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था जो कि अब धीरे–धीरे लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ रहा है।

परिसर के कोरियाई भाषा केन्द्र को मिली वित्तीय मदद

03 जुलाई।डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय परिसर में कोरियाई भाषा केन्द्र के अन्तर्गत संचालित होने वाले पाठ्यक्रमों में कोरियाई भाषा, कोरियाई सभ्यता की प्रस्तावना तथा भारत–कोरिया के सामाजिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध में प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रमों का अध्ययन कार्य इसी सत्र से प्रारंभ हो रहा है।

भाषा केन्द्र के समन्वयक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि इस केन्द्र में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों का वेतन आदि मद पर आने वाले समस्त खर्चों का भुगतान कोरियाई गणराज्य के शकिंग सी जान इंस्टिटयूट फाउंडेशन रिपब्लिक आफ कोरिया द्वारा किया जायेगा।

प्रो0 श्रीवास्तव ने इस वित्तीय सहायता मुहैया कराने के बारे में बताया कि कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित की प्रेरणा, दूरदर्शी सोच एवं हर स्तर पर उचित दिशा निर्देश के कारण ही यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो पाया है। इस भाषा केन्द्र के माध्यम से अयोध्या एवं कोरियाई गणराज के अन्तर्सम्बंधों को मजबूती मिलेगी। कोरियाई गणराज के शकिंग सी जान इंस्टीट्यूट फाउंडेशन रिपब्लिक आफ कोरिया संस्थान द्वारा विश्वविद्यालय के लिए वित्तीय सहायता के लिये यह उपलब्धि निश्चित रूप से गौरव पूर्ण है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ, भाषा केन्द्र बोर्ड के सदस्य ओम प्रकाश सिंह, डॉ0 रजनीश सिंह एवं डॉ0 अरूण प्रकाश पांडे ने हर्ष जताते हुये हर स्तर पर केन्द्र के विकास के लिये निरंतर सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

पाइथन प्रोग्रामिंग नई तकनीक के अनुप्रयोग में लाभप्रदः कुलपति

20 जून । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में "पाइथन प्रोग्रामिंग विथ वर्चुअल लैब" विषय पर पांच दिवसीय(20–24 जून, 2020) ई–वर्कशॉप का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि वर्तमान समय में पाइथन प्रोग्रामिंग नई तकनीक के अनुप्रयोग में लाभप्रद है। विश्वव्यापी महामारी कोरोना के समय शिक्षा जगत के लिए वर्चुअल लैब प्लेटफॉर्म ही प्रैक्टिकल सीखने में सहायक है।

कार्यक्रम में मुख्य विशेषज्ञ नेशनल इनफार्मेशन सेंटर, नई दिल्ली के मुख्य प्रोग्रामर इं0 वसीम ने प्रातिभागियों को बताया कि पाइथन जीयूआई बेस्ड डेस्कटॉप एप्लीकेशन, फोटो प्रोसिसिंग, ग्राफिक डिजाइन एप्लीकेशन, साइंस और कम्प्यूटेशनल एप्लीकेशन, स्पोर्ट्स एवं वेब फ्रेमवर्क एप्लीकेशन में होता है। साथ ही इसका व्यावसायिक अनुप्रयोग, ऑपरेटिंग सिस्टम, भाषा विकास, प्रोटोटाइप आदि में उपयोग किया जाता है। कार्यक्रम में वक्ता के रूप में ऐप इन्वेंटिव टेक्नोलॉजी, नोएडा के डिलीवरी मैनेजर दिलीप गुप्ता ने प्रतिभागियों को पाइथन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 आर0 के0 तिवारी ने बताया कि पाइथन प्रोग्रामिंग एवं वर्चुअल लैब प्लेटफॉर्म आज की आवश्यकता है। इसके लिए छात्र निरन्तर अपडेट होते रहें। प्रो0 अशोक शुक्ला ने इस महामारी में व्यवसाय के संतुलन में तकनीकी ज्ञान और प्रयोगात्मक कार्यों के डिजिटल वैल्यू और ग्लोबल इकोनामी में परिवर्तन पर विस्तृत व्याख्यान दिया। आई0आई0टी0 के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने ई–वर्कशॉप में प्रतिभाग करने वाले सभी अतिथियों, शिक्षकों, वक्ताओं एवं छात्रों का स्वागत किया। वर्कशाप के संयोजक डॉ0 बृजेश भारद्वाज ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के कोऑर्डिनेटर अखिलेश कुमार ने बताया कि 300 से अधिक छात्रों ने पाइथन कार्यशाला में प्रतिभाग किया।

•आई0ई0टी0 संस्थान के इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग तथा इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा 01–05 जुलाई, 2020 को 'लर्निंग बाय परफॉर्मिंगः लैब' विषय पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

•कोविड–19 महामारी के संक्रमण से निपटने के लिए आवासीय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में दिनांक 31 जुलाई, 2020 तक शैक्षणिक कार्य स्थगित रहेंगे। उक्त अवधि के दौरान परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक वर्क फ्रॉम होम के तहत ऑनलाइन शिक्षण कार्य करते रहेंगे।

•अवध विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एंड सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट सेल द्वारा ऑनलाइन प्लेसमेंट ड्राइव के अंतर्गत प्रथम चरण का आयोजन 12 जुलाई, 2020 को किया गया।

•आई0ई0टी0 के एम0सी0ए0 विभाग में "इंटरनेट ऑफ थिंग्स" विषय पर 07 जून, 2020 को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

संयमित दिनचर्या से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता हैः कुलपति

27 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्विद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग एवं तकनीकी संस्थान के संयुक्त संयोजन में "अंडरस्टैंडिंग इम्युनिटी अगेंस्ट सार्स कोवी–2" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि मनुष्य को हमेशा सकारात्मक रहने का प्रयास करना चाहिए। यह भी एक प्रामाणिक तथ्य है कि सकारात्मक और नकारात्मक विचार अलग–अलग प्रकार से मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करते हैं। कुल. पति ने कहा कि मनुष्य प्रकृति के करीब रहकर ही अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकता है। वर्तमान के शोधार्थियों और वैज्ञानिकों को भारतीय पुरातन विज्ञान का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

कुलपति ने कहा कि हमें महामारी से हमारी खुद की इम्यूनिटी ही बचा सकती है और इसके लिए अपने एमेनिटीज इम्यून सिस्टम को सुधारना होगा जो कि वातावरण और खान–पान पर निर्भर करता है। संयमित दिनचर्या का पालन कर के भी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि कोविड–19 के अलग–अलग देशों में अलग–अलग प्रभाव पड़े हैं। विश्व के विकसित और सम्पन्न देशों को भी कोरोना के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जबकि विकसित देशों की तुलना में भारत की स्थिति अपेक्षाकृत नियंत्रण में है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 एस0के0 गर्ग ने अपने वक्तव्य में कहा कि आधारभूत तथ्यों को समझना बहुत जरूरी है। यदि पहले इन तथ्यों को समझाया जाए, तो कोई समस्या नहीं होगी। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि कोई भी वायरस खुद के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मनुष्य को प्रभावित करते हैं। परन्तु कभी–कभी ये वायरस अत्यन्त घातक सिद्ध होते हैं। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण कोरोना वायरस है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मेडिकल यूनिवर्सिटी ऑफ साऊथ कैरोलिना चार्ल्सटन, यू0एस0ए0 के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 शिखर मल्होत्रा ने तकनीकी सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि कोविड–19 इस समय संसार की सबसे बड़ी त्रासदी बनकर सामने आया है। कोरोना ने विश्व के लगभग सभी देशों को अपने प्रकोप से प्रभावित किया है। कई देशों में तो कोरोना के सामुदायिक संक्रमण के कारण, स्थिति अत्यन्त भयावह भी हो गयी है। प्रो0 मल्होत्रा ने कोरोना के कारण, इम्यून सिस्टम वायरस के खिलाफ कैसे काम करता है और रोकथाम से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं जैसे वैक्सीन का विकास, प्लाज्मा थेरेपी आदि पर विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना के साथ किया गया। उसके उपरांत कुलगीत की डिजिटल प्रस्तुति की गई। अतिथियों का स्वागत विभाग के प्रो0 राजीव गौड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 तुहिना वर्मा द्वारा किया गया। तकनीकी सहयोग पारितोष त्रिपाठी, रमेश मिश्र, अखिलेश मौर्य, विवेक अमलानी, विनीत सिंह ने प्रदान किया।

इस अवसर पर प्रो0 डी0के0 मोदी, प्रो0 बेचन शर्मा, डॉ0 शुचि श्रीवास्तव, प्रो0 नीलम पाठक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 नीलम यादव, अनुराग, आशुतोष सहित बेबिनार में बारह सौ से अधिक प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

नवाचारों ने देश की दिशा बदल दी हैः प्रो0 दीक्षित

27 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान एवं आम्बेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी बेंगलुरु तथा मेजदान अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान अकादमी तुर्की के संयुक्त संयोजन में "फ्यूचर इंजीनियरिंग" विषय पर दो दिवसीय(26–27 जून, 2020) अंतरराष्ट्रीय ई–कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय काफ्रेंस का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि औद्योगिक व विज्ञान के क्षेत्र में नवाचार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आज हम देख रहे हैं कि स्पेस इंजीनियरिंग, ओशन इंजीनियरिंग, एस्ट्रो फिजिक्स, रिवर्स इंजीनियरिंग, 3–डी प्रिंटिंग एंड डिजाइन, इंटीग्रेशन एंड ऑटोमेशन, नेटवर्किंग, मैकेनिकल एंड मैटेरियल्स इंजीनियरिंग रिसर्च एंड टेक्नोलॉजीज में होने वाले नवाचारों ने देश की दिशा बदल दी है। कुलपति ने प्रतिभागियों से कहा कि जीवन को जानने, पढ़ने और इसमें नवाचार पैदा करने के लिए पांच बिंदुओं का हमेशा ध्यान रखना होगा जिसमें सीखना, बढ़ना, स्वप्न देखना, नवाचार, श्रेष्ठ मानव बनना शामिल हैं।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता चांगवॉन नेशनल यूनिवर्सिटी, साउथ कोरिया के डॉ0 सुनील कुमार शर्मा ने रेल तकनीक प्रणाली में सॉफ्टवेयर के उपयोग से होने वाली मल्टी बॉडी सिस्टम एंड व्हील रिस्पांस जनरेटर के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। विशिष्ट अतिथि, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ0 ललित कुमार सिंह ने डिजाइन सत्यापन प्रणाली और नियंत्रण प्रणाली विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि तकनीकी के क्षेत्र में डिजाइन सत्यापन का उपयोग ज्यादा हो रहा है।

समापन सत्र के मुख्य वक्ता इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रंटियर मटेरियल डीकिन विश्वविद्यालय ऑस्ट्रेलिया के डॉ0 जून वांग ने मैग्नीशियम मिश्रण धातु में विरूपण तंत्र का अध्ययन करने के लिए सी–2 सिंक्रोट्रॉन एक्स–रे विवर्तन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि हल्के मिश्रित धातु का उपयोग करके हम एयरोस्पेस, परिवहन और खनन क्षेत्र में उनके उपयोग को बढ़ा सकते हैं और उनके भारी समकक्षों को बदल सकते हैं। बदले में यह ऊर्जा और उत्सर्जन में कमी लाता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर के डॉ0 आशीष दास ने बताया कि 3–डी प्रिंटिंग एक ऐसी कंप्यूटर नियंत्रित प्रक्रिया है जिसमें सामग्री को परतों के रूप में जमा करके तीन आयामी ऑब्जेक्ट बनाया जाता है। उन्होंने बताया कि 3–डी प्रिंटिंग कोविड–19 महामारी के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह सुरक्षा ऑक्सीजन वाल्व, वेंटिलेटर और श्वसन तंत्र के निर्माण से मानव के जीवन को बचा रहा है।

कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्रा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए फ्यूचर इंजीनियरिंग 2020 के आयोजन के महत्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम के संयोजक नितेश कुमार दीक्षित ने अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन आयोजन सचिव आशीष कुमार पांडे ने किया। आयोजन सचिव दिलीप कुमार ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

महामारी से निपटने के लिए व्यापक चिन्तन की जरूरतः प्रो0 शर्मा

15 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में "कोविड क्राइसिस रेमिडेशन ऑफ माइग्रेंट वर्कर्स एंड सोसाइटी यूजिंग टेक्नोलॉजी फॉर रिबिल्डिंग द हेल्दी नेशन" विषय पर आईडियाथॉन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो0 पी0बी0 शर्मा ने बताया कि कोविड–19 के कारण इस समय देश एक बड़े संकट का सामना कर रहा है। महामारी से निपटने के लिए व्यापक चिंतन की जरूरत है और भविष्य की नीतियों को दृष्टिगत रखते हुए हमें अपनी योजनाएं बनानी होगी। लोगों को वैज्ञानिक तौर पर प्रशिक्षित करना होगा। यह दायित्व विश्वविद्यालय और इंजीनियरिंग संस्थानों को पूरा करना है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि महामारी के कारण बड़े पैमाने पर हो रहे मजदूरों का पलायन एक गंभीर चुनौती के रूप में है। जीविका छोड़कर जो मजदूर अपने गांव को लौट चुके हैं, समय के रहते उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना एक महत्वपूर्ण कार्य है। आस–पास रहकर आत्मनिर्भर बनने की पहल एक आवश्यक और महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

साइन शैडो कंसलटेंट प्राइवेट लिमिटेड की पी0आर0 एक्सपर्ट डॉ0 मोनिका सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस समय नए तौर पर प्रयोग करने की आवश्यकता है और वर्तमान परिवेश में विचारों को भी पेटेंट कराया जा सकता है। डॉ0 रितिका राजवंशी ने कहा कि मजदूरों को नए सिरे से रोजगार से जोड़ने के लिए स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप रोजगार सृजित करने होंगे। संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने विद्यार्थियों को इस महामारी के समय में एक अवसर के रूप में स्वयं को तत्पर रहने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन परितोष त्रिपाठी, रमेश मिश्र, संजीत पांडे, परिमल तिवारी एवं विनीत सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के संयोजक अमितेश पंडित ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

परीक्षा नियंत्रक उमानाथ बने कुलसचिव

01 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलसचिव रामचन्द्र अवस्थी के दिनांक 30 जून, 2020 को अधिवर्षिता की आयु पूर्ण करने पर विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक उमानाथ को कुलसचिव का कार्यभार दिया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित के आदेश के अनुपालन में कुलसचिव रामचन्द्र अवस्थी ने परीक्षा नियत्रंक उमानाथ को विश्वविद्यालय के कुलसचिव का कार्यभार हस्तान्तरित किया।

परीक्षा नियंत्रक उमानाथ द्वारा कुलसचिव का पदभार ग्रहण करने पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने हर्ष व्यक्त किया।

सेफ कैम्पस टास्क फोर्स का गठन

02 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने कोरोना काल में विद्यार्थियों के लिए एक सेफ कैंपस टास्क फोर्स का गठन किया है। कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि 11 सदस्यीय सेफ कैंपस टास्क फोर्स गठित कर दी गयी है। इसमें विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 संग्राम सिंह टास्क फोर्स के समन्वयक नियुक्त किए गए हैं। डॉ0 सिंह प्रत्येक माह बैठक आयोजित कर कार्य व्यवस्थाओं की रणनीति तैयार करेंगे। कुलसचिव ने बताया कि सेफ कैंपस टास्क फोर्स न केवल विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवस्था का ख्याल रखेगी, बल्कि विद्यार्थियों के साथ ही कर्मचारियों को भी संक्रमण से बचाने के उपाय करेगी।

परिसर के पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की तिथि बढ़ाई गई

29 जून। आवासीय परिसर में संचालित सभी पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक सत्र 2020–21 में प्रवेश के लिए स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 28 जुलाई, 2020 तक बढ़ा दी गयी है। ऑनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि 27 जुलाई 2020 निर्धारित किया गया है। स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रमों में अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन 30 जुलाई 2020 तक कर सकेंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने छात्रहित को दृष्टिगत रखते हुए यह आदेश निर्गत किया है। इससे पूर्व स्नातक पाठ्यक्रमों में ऑनलाइन आवेदन 27 जून, 2020 तक एवं शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 25 जून, 2020 निर्धारित थी। परास्नातक पाठ्यक्रम के लिए ऑनलाइन आवेदन 30 जून, 2020 तक एवं आवेदन शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 28 जून, 2020 निर्धारित की गई थी।

खेल मेंटल एबिलिटी बढ़ाने का एक माध्यम हैः कुलपति

21 जून। शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान संस्थान व फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के संयुक्त संयोजन में फिट इंडिया मुहिम के तहत 6वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 'व्यक्तित्व विकास में योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि मैं खिलाड़ी तो नहीं, लेकिन शारीरिक शिक्षा से मेरा जुड़ाव हमेशा रहा है। स्वस्थ रहने के लिए खेल बहुत जरूरी है, खेल मेंटल एबिलिटी बढ़ाने का एक माध्यम है। एक खिलाड़ी केवल शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि, मानसिक रूप से भी मजबूत होता है। योग भारत में लगभग 10,000 वर्षो से प्रयोग में है, सिन्धु घाटी सभ्यता की मोहरों में भी योग कलाओं का चित्रण देखने को मिलता है।

अपनी प्रतिभा के अनुरूप रोजगार का सृजन करेंः प्रो0 दीक्षित

23 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एंड सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट सेल द्वारा 'इंटरप्रेन्योरशिप ऑपर्च्यूनिटी' विषय पर एक दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि अपने अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को पहचानकर, विद्यार्थी अपनी प्रतिभा के अनुरूप रोजगार का सृजन करें। कुलपति ने बताया कि किसी भी व्यवसाय को शुरू करने के लिए संपूर्ण परिस्थितियों का अवलोकन करना बहुत ही आवश्यक है।

मुख्य वक्ता के रूप में फ्यूचर आइकॉन ग्रुप नोयडा की निदेशक डॉ0 अक्षिता बहुगुणा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि नये व्यवसाय को स्थापित करने के लिए स्किल की बहुत जरूरत होती है। प्लेसमेंट सेल की डायरेक्टर डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने बताया कि महामारी के दौरान उद्यमिता के अवसर का लाभ उठाने के लिए छात्र–छात्राओं को निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मनीषा यादव द्वारा किया गया।